अध्यक्ष महोदय : मैं प्रयत्न कर रहा हूं कि इस विषय पर चर्चा के लिए कोई अवसर उपलब्ध हो। लेकिन आप वक्तव्य पर टिप्पणी नहीं कर सकते।

प्रधानमंत्री की सोवियत संघ की यात्रा के बारे में वक्तव्य

STATEMENT RE. PRIME MINISTER'S VISIT TO U.S.S.R.

प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई

अध्यक्ष महोदय, जैसा कि सदन को ज्ञात है, सोवियत संघ की कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रधान मंडल के अध्यक्ष महामान्य श्री ब्रेझनेव द्वारा सोवियत नेताओं के निमंत्रण पर मैंने रूस की यात्रा की। मैं भारत से 21 अक्तूबर को रवाना हुआ और 27 अक्तूबर की सुबह वापस लौट आया। रूस में अपने प्रवास के दौरान मैं काला सागर के शहर सोची तथा यूक्रेनियाई सोवियत समाजवाद गणराज्य की राजधानी कीव भी गया। इस यात्रा में विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी भी मेरे साथ थे। इस पूरी यात्रा में हम जहां कहीं भी गये वहीं नयाचार की सामान्य अपेक्षाओं से ऊपर उठकर हमारा अत्यन्त हार्दिक एवं सद्भावपूर्ण स्वागत किया गया।

मास्को में अपने प्रवास के दौरान हमने सोवियत नेताओं से दो बार बातचीत की जिसका नेतृत्व महासचिव श्री ब्रेझनेव ने किया। सोवियत नेताओं के साथ कई बार हमारी अनौपचारिक बातचीत भी हुई। इस विचार-विनिमय में हमने अपने द्विपक्षीय संबन्धों पर तथा विभिन्न अंतराष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों पर बातचीत की। यद्यपि, इस प्रकार की बातचीत गोपनीय समझी जानी चाहिए क्योंकि उनका स्वरूप ही ऐसा होता है, फिर भी सदन को यह बताने में मुझे कोई संकोच नहीं कि हमारी बातचीत अत्यन्त स्पष्ट तथा मैत्रीपूर्ण हुई। इस बातचीत में यह बात स्पष्ट हुई कि हम एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझते सराहते हैं और दोनों का यह निश्चय भी प्रकट हुआ कि हम दोनों के बृहत्तर हित में पारस्परिक सम्मान और समानता पर आधारित अपने सहयोग और अपनी मित्रता को सुरक्षित रखकर सुदृढ़ करना चाहते हैं।

मेरे लिए सोवियत संघ की यह पहली यात्रा नहीं थी। मैंने 1960 में मास्को तथा रूस के कुछ अन्य शहरों की यात्रा की थी। अब 17 वर्ष बाद मैंने जिन स्थानों की यात्रा की उनकी आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

जब जनता सरकार सत्ता में आई तो बहुतों ने यह सोचा था कि भारत में सरकार बदलने से भारत-रूस संबन्धों को धक्का पहुंचेगा। लेकिन हम ऐसा नहीं मानते थे: इस यात्रा ने हमारे इस विश्वास की पुष्टि कर दी कि हमारे सामाजिक एवं राजनीतिक पद्धति में और कुछ मामलों में हमारे दृष्किोणों में अंतर होने के बावजूद हमारे संबन्धों को किसी प्रकार का धक्का नहीं पहुंचा है। इसके विपरीत, लाभदायक द्विपक्षीय संबन्धों के संवर्धन के सिद्धान्त के आधार पर भविष्य में दोनों के बीच सहयोग के क्षेत्र में स्वस्थ विकास की संभावनाएं हैं। जैसा कि, राष्ट्रपति ब्रेझनेव तथा मेरे द्वारा हस्ताक्षरित घोषणा में स्वीकार किया गया है, भारत-रूस संबन्ध समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। हमारे संबन्ध ऐसे हैं कि जिनसे किसी राष्ट्र को डरने की जरूरत नहीं क्योंकि यह शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्तों पर आधारित है जो सारे विश्व पर लागू होता है।

मैं इस यात्रा का विशेष स्वागत इसलिए करता हूं कि इससे मुझे सोवियत नेताओं से व्यक्तिगत संबन्ध स्थापित करने का अवसर मिला और इस बात में मुझे कोई संदेह नहीं कि हमारे संबन्धों को बनाये रखने में तथा हमारे बीच अगर कभी कोई गलतफहमी पैदा हो तो उसे दूर करने में यह बहुत उपयोगी होगा।

भारत-रूस सहयोग अनेक क्षेत्रों में एक निरंतर प्रक्रिया है: इस प्रक्रिया में कभी शिथिलता नहीं आने दी गई। मेरी यात्रा के दौरान कोई नये तकनीकी या आर्थिक प्रश्न नहीं उठे क्योंकि हमने यह महसूस किया कि विशेषज्ञों के स्तर पर ही सबसे अच्छी तरह इन पर विचार किया जा सकता है।

फिर भी, इस घोषणा में यह कहा गया है कि दोनों देशों के बीच तकनीकी, आर्थिक और वैज्ञानिक सहयोग को और सुदृढ़ करने के तौर-तरीकों का पता लगाने के लिए सोवियत संघ से विशेषज्ञों के शिष्टमंडलों के निकट भविष्य में भारत आने की संभावना है और इसके बाद इन प्रस्तावों पर भारत-सोवियत संयुक्त आयोग विचार कर सकता है। जैसा कि सदन को मालूम है कि तकनीकी, आर्थिक और वैज्ञानिक सहयोग के लिए एक भारत-सोवियत संयुक्त आयोग है। इस आयोग का स्तर हाल ही में ऊंचा कर दिया गया है। भारत की ओर से विदेश मंत्री इस आयोग के सहअध्यक्ष होंगे और सोवियत पक्ष से वहां के उप-प्रधानमंत्री, महामान्य श्री आर्खिपोव सोवियत सहअध्यक्ष होंगे। इस संयुक्त आयोग का अगला अधिवेशन अगले वर्ष के शुरू में नई दिल्ली में होगा।

मैंने राष्ट्रपति ब्रेझनेव और अध्यक्ष कोसीगन को भारत की यात्रा के लिए आमंत्रित किया है। उन्होंने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। इन यात्राओं की तिथियां बाद में तय होंगी।

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगा कि यह यात्रा सोवियत संघ के साथ भारत के संबन्धों की अनिवार्य निरन्तरता की पुष्टि करती है जो स्वयं अंतर्राष्ट्रीय स्थायित्व को संवर्धित करने के लिए सह-अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता और मैत्री के सिद्धान्तों के प्रति हमारी वचनबद्धता को मजबूत बनाती है। यथार्थ में इस यात्रा ने भारत-सोवियत संबन्धों को स्थिरता एवं सुदृढ़ता के नये आयाम प्रदान किये हैं। इसके परिणामों का हमारे देश में और सोवियत संघ में स्वागत हुआ है और मैं समझता हूं कि जिस परिपक्वता के साथ इसकी पुनःपुष्टि हुई है वह इसे तनाव शैथिल्य को संवर्धित करने और अंतर्राष्ट्रीय शांति की खोज का मार्ग प्रशस्त करने में एक महत्वपूर्ण घटक बना देगा। दोनों देशों ने यह बात भी स्वीकार की है कि ये संबन्ध उन अन्य देशों के साथ संबन्ध विकसित करने के मार्ग में रुकावट नहीं है जो शांति को आगे बढ़ाने तथा राष्ट्रों के बीच आपसी समझ को सुदृढ़ बनाने के समान लक्ष्यों से अनुप्रेरित हैं। संक्षेप में, जैसा कि मैंने मास्को में कहा था वर्तमान भारत-सोवियत संबन्धों को किन्हीं भी दो देशों के लिए अनुकरणीय आदर्श माना जा सकता है।

समाचार खबर एजैन्सी के बारे में वक्तव्य

STATEMENT RE. SAMACHAR NEWS AGENCY

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्री लाल कृष्ण अडवाणी) : माननीय सदस्यों को मेरा वह वक्तव्य याद होगा जो मैंने उन परिस्थितियों, जिनके परिणामस्वरूप चार समाचार एजेंसियों, जो उस समय तक काम कर रही थीं, के विलय से "समाचार" का गठन हुआ था, पर 7 अप्रैल, 1977 को सदन में दिया था। मैंने यह भी बताया था कि इस ढांचे के विरुद्ध हुई व्यापक आलोचनाओं और प्रेस की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने की सरकार की वचनबद्धता को देखते हुए मैं विशेषज्ञों की एक समिति गठित कर रहा हूं जो "समाचार" के भविष्य के बारे में जांच कर अपनी रिपोर्ट देगी।

2. जैसा कि माननीय सदस्यों को पता है, यह समिति श्री कुलदीप नायर की अध्यक्षता में 19 अप्रैल, 1977 को गठित की गई थी। इसके 11 अन्य सदस्य थे। समिति की रिपोर्ट 13 अगस्त, 1977 को प्रस्तुत की गई थी और उसके शीघ्र बाद जारी कर दी गई थी ताकि जो सिफारिशें की गई हैं उनके प्रति सरकार अपना दृष्टिकोण बनाने में समाचारपत्रों और जन साधारण की प्रतिक्रियाओं से लाभान्वित हो सके। रिपोर्ट के जारी होने के बाद 31 अगस्त 1977 को "समाचार" की प्रबन्ध समिति ने एक